आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक :7 बीकानेर, मार्च, 2016 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

पशुधन उत्थान के लिए तकनीकी का समावेश जरूरी

राज्य में पशुधन के परिदृश्य में और अधिक बदलाव लाने के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय निरंतर प्रयासरत है। पशुपालन को आधुनिक बनाने और राज्य में श्रेष्ठ पशुधन के लिए विश्वविद्यालय ने गौ मूत्र से लेकर पशुपालन में अंतरिक्ष आधारित प्रौद्योगिकी तक अनुसंधान और विकास के कार्य हाथ में लिए हैं। राज्य में पशुधन को समृद्ध बनाने के लिए तकनीकी का समावेश बढ़ाया जाना जरूरी है। इस कार्य में हमें राज्य सरकार का भरपूर सहयोग मिल रहा है जिसके परिणामस्वरूप राज्य में उपलब्ध स्वदेशी पशुधन से उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य में सफलता मिल रही है। हाल ही में नई दिल्ली में आयोजित पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपतियों के सम्मेलन में माननीय केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने भी राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की है। राज्य में विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित 8 अनुसंधान केन्द्रों पर गौवंश की राठी, थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल, गिर और मालवी नस्लों से उत्पादन बढ़ाने में आशातीत सफलता मिल रही है। राज्य में अच्छी नस्लों के ऊंट, घोड़े, भैंस, बकरी व भेड़ बहुतायत में उपलब्ध हैं। राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में 85 फीसदी पशु रखे जाते हैं। राज्य में ऊंट को राज्य पशु का दर्जा मिला है। मुक्तसर (पंजाब) में आयोजित पशु मेले में मारवाड़ी नस्ल के घोड़ों की बड़े पैमाने पर खरीद फरोख्त हुई है। मानसून के कमजोर रह जाने पर 80 फीसदी वर्षा आधारित खेती पर विपरीत असर आने की स्थिति में राज्य का पशुधन हमारे लिए सुकाल का मेहमान सिद्ध होता है। यह हमारी धरोहर है जिससे नियमित आय बनी रहती है। हमारा राज्य देश में दुग्ध उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। यहां प्रति व्यक्ति प्रतिदिन दूध उपलब्ध भी अधिक होता है जिससे दुग्ध प्रोटीन की आपूर्ति होती है। इसी कारण राज्य में स्वस्थ नागरिक भी ज्यादा हैं। तमिलनाडु, गोआ, महाराष्ट्र सहित अन्य प्रांतों में राज्य के देशी गौवंश के पालन का रूझान बढ़ रहा है। राजस्थान अच्छे नस्ल के पशुओं को निर्यात करने की स्थिति में है। अब समय आ गया है कि हम अपने देशी पशुधन को ओर अधिक समृद्ध और उत्पादक बनाने के लिए तकनीकी का समावेश करें।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

श्रम राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्रसिंह टीटी और सूरतगढ़ के विधायक श्री राजेन्द्रसिंह भादू वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के परिसर का लोकार्पण करते हुए

मुख्य समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के परिसर का राज्यमंत्री टीटी व विधायक भादू ने किया लोकार्पण

श्रम, रोजगार, कारखाना एवं बॉयलर निरीक्षण विभाग के राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्रपाल सिंह टीटी ने 31 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के परिसर का लोकार्पण करके यहां आयोजित कृषक–पशुपालक गोष्ठी को सम्बोधित किया। इस अवसर पर राज्यमंत्री श्री टीटी ने कहा कि कृषि में नई तकनीक और अनुसंधान को अपनाकर लाभदायक

खेती और पशुपालन किया जा सकता है। राज्यमंत्री श्री टीटी ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय का प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र इस क्षेत्र के लिए एक वरदान है। पशुपालक यहां अनुसंधान और तकनीक को सीखकर पशुधन उत्पादन में वृद्धि करके अपने को खुशहाल बना सकेंगे। समारोह के विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक और राजुवास बोम के सदस्य श्री राजेन्द्रसिंह भादू ने कहा कि नये प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र क्षेत्र के पशुपालकों और कृषकों के लिए एक असाधारण और उपयोगी संस्थान है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सेवाएं यहां सुलभ होगी जिससे पशुधन उत्पादन, प्रजनन और पशु चिकित्सा की सेवाएं मिलेगी। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने कहा कि विश्वविद्यालय पशुपालकों के हित में गौ मूत्र से लेकर अंतरिक्ष आधारित पशु चिकित्सा तकनीकी के अनुसंधान और विकास कार्यों में लगा हुआ है। राज्य में पशुचिकित्सा शिक्षण, अनुसंधान और कौशल विकास कार्यों के माध्यम से पशुपालन को समृद्ध और लाभकारी व्यवसाय बनाने के लिए कटिबद्ध है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक और केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर. के. धूड़िया ने स्वागत भाषण करते हुए केन्द्र के उद्देश्यों की जानकारी दी। प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के प्रभारी वैज्ञानिक डॉ. अशोक बैंदा ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित ''राजुवास प्रदर्शनी'' का भी कृषकों, पशुपालकों और नागरिकों ने अवलोकन किया। समारोह में नगरपालिका सूरतगढ़ की सभापति श्रीमती काजल छाबड़ा, पंचायत समिति प्रधान श्रीमती बिरमा देवी भी उपस्थित थी। इस अवसर पर आयोजित कृषक–पशुपालन गोष्ठी में केन्द्रीय पशु प्रजनन फार्म सूरतगढ़ के निदेशक डॉ. संतोष, कृषि विभाग श्रीगंगानगर के संयुक्त निदेशक डॉ. वी. एस. नैण, उपनिदेशक डॉ. सतीश शर्मा, आत्मा के परियोजना निदेशक जी. आर. मटोरिया, डॉ. दीपिका धूड़िया, सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर और कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर के प्रभारी डॉ. नवीन सैनी ने कृषकों–पशुपालकों को विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत जानकारी दी।

गो–शाला प्रबंधकों के सम्मेलन का आयोजन

राज्य के गोपालन विभाग और वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा संभाग के गोशाला प्रबंधकों, प्रगतिशील गोपालकों एवं पशुचिकित्सा एवं आयुर्वेद चिकित्सकों का एक दिवसीय सम्मेलन एवं प्रश्नोतरी कार्यक्रम 20 फरवरी को आयोजित किया गया। सम्मेलन में बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, नागौर जिले के लगभग 70 संभागियों ने भाग लिया। पशुपालन व गोपालन विभाग के शासन सचिव श्री कुंजीलाल मीणा, वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत और गोपालन विभाग के निदेशक शैलेश शर्मा ने दीप प्रज्जवलित कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि ने पशुपालन विभाग की ओर से बीकानेर जिले की श्रेष्ठ गोशाला के रूप में भीनासर की श्री मुरली मनोहर गोशाला को 15 हजार रूपये नकद राशि का पुरस्कार प्रदान किया। कार्यशाला में संभागियों के लिए आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में बीकानेर के सूरजमालसिंह नीमराना प्रथम रहे, जिन्हें 1100 रू. राशि का नकद पुरस्कार दिया गया। द्वितीय पुरस्कार में 501 रू. राशि राजलदेसर के ललित दाधीच और 251 रू. राशि का तृतीय पुरस्कार लूनकरणसर के अभयसिंह पंवार को प्रदान किया गया। पशुपालन शासन सचिव श्री कुंजीलाल मीणा ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों में जाकर पशुचिकित्सा एवं स्वास्थ्य और उपलब्ध उपचार सेवाओं को देखा। कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने वेटरनरी क्लिनिक्स में क्रिटिकल केयर यूनिट, रेडियोलॉजी विभाग और पशु शल्य चिकित्सा कक्षों में उपलब्ध आधुनिक तकनीक और चिकित्सकीय उपकरणों के बारे में अवगत करवाया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय में डॉग–शो आयोजित

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 13 फरवरी को आयोजित 'डॉग शो' में सैंकड़ों श्वान प्रेमियों ने दुनिया भर में पाई जाने वाली विभिन्न श्वानों की प्रजातियों का दिग्दर्शन कर उनके हुनर से रोमांचित होकर मुक्तकंठ से सराहना की। वेटरनरी कॉलेज और केनाइन वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित डॉग शो में 94 विभिन्न प्रजातियों के श्वानों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की जिसमें सबसे छोटी प्रजाति का मैक्सिकन "चिहुआहुआ", सबसे बड़ी ग्रेटडेन और भारी–भरकम सैन्ट बर्नार्ड श्वान दर्शकों के प्रमुख आकर्षण के केन्द्र रहे। डॉग शो में रोडेशियन जैसी दुर्लभ प्रजाति का श्वान भी पहुँचा। अतिथियों ने इस अवसर पर विश्वविद्यालय द्वारा श्वानों के बारे में प्रकाशित तीन फोल्डर का विमोचन किया। इनमें श्वानों की ग्रूमिंग (मालिश) कैसे करें, पालतू श्वान और प्रदूषित भोजन और फेडी डॉग सिन्ड्रॉम नामक फोल्डर जारी किये गए।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वीयूटीआरसी, सूरतगढ़ द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ (गंगानगर) द्वारा 5 फरवरी को गांव शोमासर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 35 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा 40 महिला पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 12, 23 एव 24 फरवरी को गांव खाम्बल, अणगौर, तेलपीखेड़ा एवं सादेला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 40 महिला पशुपालक सहित 95 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाडनूं द्वारा 11 एवं 16 फरवरी को गांव बादेड़ एवं खरड़िया में तथा 19 फरवरी को किसान सेवा केन्द्र, लाडनूं में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 101 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 17 एव 22 फरवरी को गांव पोडलिया एवं बुडावारा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 58 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 2 एवं 19 फरवरी को गांव बोराई एवं सीसवाड़ा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 58 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, अजमेर द्वारा 186 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 6, 8, 9, 12 एव 15 फरवरी को गांव रघुनाथपुरा, केकड़ी, होकरा, लालावास, जयसिंहपुरा, बालापुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 186 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 10, 16 एवं 20 फरवरी, 2016 को संडीला, सांखना एवं सोरण गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 68 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा 143 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 10, 12, 18 एव 23 फरवरी को गांव गलाना, बडोदिया, रानीपुरा, दीपपुरा एवं बनियानी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 143 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 4 एवं 5 फरवरी, 2016 को गांव लक्ष्मीपुरा एवं जयसिंहपुरा में तथा 9 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 70 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 4, 5, 6, 12 एवं 25 फरवरी को पाण्डूसर, गोरखाना, पिचकाई, करवाली एवं रामगढ़ गांवों में तथा 8–10, 16–18 एवं 22–24 फरवरी को कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर पर कृषक/पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 270 पशुपालक एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, चूरू में कृषक वैज्ञानिक संवाद

वीयूटीआरसी, चूरू द्वारा 2,5,8,10,12 एवं 23 फरवरी को गांव पोटी, करणपुरा, कड़वासरा, भैंरूसर, गौरीसर एवं रतनसरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 147 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु मेले–मगरिये हमारे लिए उपयोगी

पशुपालन थार रेगिस्तान में जीवन रेखा की भूमिका निभाता है। पशुधन का राजस्थान के सकल घरेलू उत्पादन में 8 प्रतिशत का महत्वपूर्ण योगदान है। राजस्थान के शुष्क व अर्द्धशुष्क क्षेत्र में पशुपालकों के लिए पशुपालन एक जैविक संसाधन है। गाय, भैंस, भेड, बकरी, ऊँट, घोड़ा एंवम मुर्गी किसान के मित्र हैं जो विपरीत जलवायु में भी जीविकोपार्जन के महत्वपूर्ण अंग साबित हुए हैं। अल्प वर्षा तथा रेगिस्तान की विरल वनस्पती जैसी परिस्थितियों में पशुपालन किसानों को आर्थिक समृद्धि प्रदान करता है तथा इसी वजह से राज्य के किसान अन्य राज्यों की तुलना में आर्थिक व मानसिक रूप से समृद्ध है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर अनेक मेले एवम् प्रदर्शनी आयोजित की जाती हैं। इस वैज्ञानिक युग में पशुपालकों को नवीनतम तकनीकी जानकारी से अवगत करवाया जाता है जिससे कि वे अधिक लाभ प्राप्त कर सकें। मेले एवम् प्रर्दशनी में तकनीकी ज्ञान न केवल बताया जाता है बल्कि सजीव मॉडल द्वारा प्रदर्शित भी किया जाता है। अतः तकनीक को समझना आसान हो जाता है। पशुपालन को उन्नत नस्ल के पशुओं से रू–बरू करवाया जाता है तथा उन्हें नस्ल की पूर्ण जानकारी दी जाती है। पशुपालकों को कम लागत में सन्तुलित आहार द्वारा अधिकतक उत्पादन प्राप्त करने के गुर बताए जाते हैं। उत्तम नस्ल व हष्ट–पुष्ट पशुओं की विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं तथा विजेता पशुओं को नकद ईनाम द्वारा सम्मानित किया जाता है। इससे अन्य पशुपालक भी अच्छे पशु रखने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। स्वस्थ पशुधन को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न प्रकार के टीकाकरण व मौसमी बीमारियों से बचाव के उपाय भी विशेषज्ञों द्वारा पशुपालकों को बताए जाते हैं। यही नहीं मेले में दूर दराज से आए हुए पशुपालक पशुओं की खरीद–फरोख्त से समय व धन की बचत करते हैं। डेयरी, मत्स्य, कुक्कुट, इमू पालन की स्थापना व वैज्ञानिक विधि से संचालन की जानकारी दी जाती है। पशुपालकों को देशी नस्ल के उत्तम पशुओं को बढावा देने हेतु उत्साहित किया जाता है। अच्छे रख–रखाव व सफाई से विभिन्न बीमारियों से बचाव की जानकारी दी जाती है। नवजात पशुओं का प्रबंधन, खानपान व बीमारियों से बचाव के उपाय पशुपालकों को लाभान्वित करते हैं। इन मेले एवम् प्रर्दशनियों में पशुओं के ईलाज के साथ–साथ विशेषज्ञों द्वारा पशुपालकों की कठिनाइयों का भी समाधान किया जाता है। इससे पशुपालक तो संभवतः लाभान्वित होते ही हैं अपितु वैज्ञानिकों को भी अपनी तकनीक प्रदर्शित करने का एक मंच मिल जाता है जिससे उन्हें गांव–ढाणी में जाने की बजाए विभिन्न जगह के पशुपालक एक ही जगह मिल जाते हैं। पशुपालकों की प्रचार प्रसार की विभिन्न सामग्री फोल्डर, पंपलेट, लीफलेट, पत्रिका,सीडी आदि दी जाती है जिसे वे अपने पास रख कर समय–समय पर लाभ ले सकते हैं। अतः मेले एवं प्रदर्शनी पशुपालकों की आर्थिक समृद्धि व उन्नति में मील का पत्थर साबित हुए हैं।

–डॉ. रूचि मान, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–मार्च, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	बीकानेर, सीकर, कोटा, उदयपुर, नागौर, जोधपुर, हनुमानगढ़
माता रोग (चेचक)	भेड, बकरी, ऊँट	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, सिरोही
मुँहपका–खुरपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	बाड़मेर, चूरू, दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, नागौर, सवाईमाधोपुर, अजमेर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, अलवर, भीलवाड़ा, हनुमानगढ़, कोटा, बारां, झुंझुनूं, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर
लँगड़ा बुखार	गाय	चित्तौड़गढ़, बीकानेर, हनुमानगढ़, जयपुर
बोटूलिज्म	गाय	बाड़मेर, जोधपुर, जैसलमेर
गलघोंटू	गाय, भैंस	दौसा, अजमेर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, जयपुर, सीकर, हनुमानगढ़, चित्तौडगढ़, पाली, टौंक, भरतपुर, अलवर, उदयपुर
प्लूरोन्यूमोनिया	बकरी	सीकर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर
बबेसियोसिस (खून मूतना)	गाय, भैंस	चित्तौड़गढ़, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
ऐनाप्लाज्मोसिस	भैंस	भरतपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमीयेसिस, फेसियोलियेसिस)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी
सर्रा (तिबरसा)	गाय, भैंस, ऊंट	धौलपुर, भरतपुर, सीकर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्शीयस ब्रोंकाइटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

गर्भवती भैंसों में बच्चेदानी के मरोड़ की रोकथाम कैसे करें

भैंस के सफल प्रजनन के लिए जनन सम्बन्धित कार्य विधि, समस्याएं और उनके निराकरण सम्बन्धी जानकारी पशुपालक भाईयों एवं बहनों के लिए अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण हैं। भैंस पालन पशुपालकों के लिए तभी लाभदायक साबित होगा जब भैंस के रखरखाव से लेकर सफल ब्यात तक कुशलतापूर्वक हो जाये। गर्भवती भैंस के सफल जनन के पश्चात ही गुणवत्ता पूर्वक दूध एवं स्वस्थ बच्चा प्राप्त होता है। गर्भवती भैंसों की एक प्रमुख समस्या यह है कि गर्भ के अन्तिम दिनों में बच्चेदानी में घूमाव (आटी) का आ जाना। आमतौर पर ऐसी भैंस प्रसव के पास होती है या फिर एक महीने के अन्तराल के बाद ब्याहने वाली होती है। इस बीमारी को पशुपालकों में मरोड़ या आटी या घूमाव के नाम से जाना जाता है तथा चिकित्सक भाषा में यूटराईन टोरसर भी कहते हैं। आमतौर पर रेफरल पशु अस्पतालों में मुश्किल प्रसव से ग्रसित भैंसो में यह बीमारी (मरोड आटी) अत्यधिक पायी जाती है, जिसके कारण अच्छी नस्ल की भैंसों की असमय मृत्यु हो जाने के कारण पशुपालक भाईयों एवं बहनों को दुगुना नुकशान भैंस एवं भैंस का बच्चा दोनों से सामना करना पड़ता है जो कि किसी भी पशुपालक के लिए बहुत ही आर्थिक एवं मानसिक दुःख की स्थिति हो जाती है। अतः पशुपालकों के लिए यह अत्यन्त ही सावधानी बरतने वाली बीमारी हैं जिसके होने के कारण निम्न हैं :

- गर्भवती भैंसों के अन्तिम 9–10 महिनों में गर्भ (बच्चेदानी) में तरल पदार्थ की कम मात्रा।
- बच्चेदानी को पकड़ कर रखने वाले लीगामन्ट कमजोर होते हैं, यह मुख्यतया भैंसों में जिसके कारण बच्चेदानी स्थिर नहीं रह सकती।
- बच्चेदानी में बच्चा 9–10 महीने में अत्यधिक हिलने व इधर–उधर घूमने लग जाता है।
- भैंसों का भारी भरकर शरीर व लटकता हुआ पेट आटी के लिए ज्यादातर जिम्मेदार होते हैं।
- गर्भवती भैंस का अचानक से पैर फिसलना व गिर जाना।
- गर्भवती भैंसों को इधर–उधर गाड़ियों में ले कर जाना।
- फिसलन भरा फर्श या फिर उबड़–खाबड़ जगह पर रखना।
- गर्भवती भैंस को जल्दी–जल्दी या तेजी के साथ भगाना।
- गर्भवती भैंसों का पानी में जाना और ज्यादा देर तक पानी (तालाब, कुण्ड अथवा ठहरे हुए पानी) में रहना जिसके कारण भैंस का शरीर फ्री हो जाता है और बच्चा बच्चेदानी के साथ घूम जाता है।

मरोड/घूमाव/टोरसन या आटी के लक्षणः–

- ब्यात के अन्तिम दिनों मे अचानक गर्भवती भैंस का चारा या बाटा खाना छोड़ देना एक मुख्य लक्षण है।
- गर्भवती भैंस का बार बार उठना–बैठना।
- गर्भवती भैंस का बार बार बच्चेदानी या फिर पीछे की तरफ मुंह मोड़कर के देखना।
- थोड़ा थोड़ा जलमस के साथ गोबर करना।
- गर्भवती भैंस का पेट दर्द होना या शरीर को तानना।
- गर्भवती भैंसों के सामान्य व्यवहार में अन्तर आ जाना जिसके लिए पशुपालक भैंस के पास जा कर उसे सावधानी पूर्वक देखें।

उपचारः– उपरोक्त में अगर कोई भी लक्षण गर्भवती भैंस में दिखाई दे तो भैंस की सामान्य जांच के अलावा बच्चेदानी की जांच एक पंजीकृत पशुचिकित्सक से तुरन्त करावें, अगर सही समय पर आटी की जांच हो जाए तो अधिक से अधिक जच्चा व बच्चा की जान बचायी जा सकती है।

सावधानियांः–

- गर्भवती भैंसो को मध्य गर्भकाल 5–6 महीने के बाद गर्मी से बचने के लिए घर पर ही नहलायें, न की बाहर किसी तालाब या कुण्ड में छोड़ें, जिससे आटी की संभावना को कम किया जा सकता है।
- फर्श फिसलन भरा या उबड़–खाबड़ की जगह कच्चा मिट्टी वाला समतल हो।
- गर्भकाल के अन्तिम महीनों के समय खेतों में चराने के लिए नहीं छोड़ें, घर पर ही चरायें। इन स्थितियों में पशुपालकों को जागरूक होना आवश्यक है ताकि आर्थिक हानि से बचा जा सके।

– डॉ.सन्दीप धोलपुरिया एवं डॉ. चन्द्रशेखर सारस्वत (मो. 9114230515)

अपने स्वदेशी गौवंश को पहचानें — कांकरेज गौ नस्ल -गौरव प्रदेश का

कांकरेज नस्ल गुजरात के अहमदाबाद, बनास कांठा, खेड़ा मेहसाना, साबर कांठा, कच्छ तथा राजस्थान के बाड़मेर तथा जोधपुर जिले में पायी जाती है। बनास कांठा जिले के तालुक 'कांक' के नाम पर इसको कांकरेज कहा जाने लगा। यह एक महत्वपूर्ण नस्ल है जिसका विदेशों में सबसे अधिक निर्यात हुआ है। ब्राजील में इस नस्ल को गुजरात के नाम से जाना जाता है तथा लेटिन व दक्षिण अमेरिकी राज्यों में इसका उपयोग स्थानीय नस्लों के विकास में हुआ है। परम्परागत रूप से खानाबदोश प्रजनक जैसे रेबारी, बारवर जाति के लोग इस नस्ल के पशुओं का प्रजनन करवाते हैं। इस नस्ल के पशु अपनी शक्तिशाली भारवाहक क्षमता तथा औसत दूध उत्पादन के लिए जाने जाते हैं। इनका रंग चमकीला धूसर से लौह धूसर प्रकार का होता है। इनके सींग मजबूत तथा बाहर से ऊपर की ओर घुमाव लिए होते हैं। भारी भरकम शरीर, बड़े खुले कान तथा मजबूत सींग इनकी विशिष्ट पहचान है। नर व मादा पशुओं का भार लगभग 525 कि.ग्रा. व 343 कि.ग्रा. क्रमशः होता है और शारीरिक ऊँचाई क्रमशः 158 से.मी. व 125 से.मी. होती हैं। गायों का प्रति ब्यांत दूध उत्पादन औसतन 1738 कि.ग्रा. तथा ब्यांत अंतराल 15 माह होता है। प्रथम ब्यांत के समय आयु 47 माह के करीब होती है। भारत सरकार द्वारा इस नस्ल के सुधार और पहचान हेतु झुण्ड पुस्तिका स्थापित की गयी है जिसमें पंजीकरण हेतु 300 दिवस का न्यूनतम दुग्ध उत्पादन 700 कि.ग्रा. होना आवश्यक है।

कांकरेज देशी गौवंश के उन्नयन एवं संवर्द्धन का कार्य राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कोडमदेसर (बीकानेर) स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्र पर किया जा रहा है। आकर्षक और अच्छी कद–काठी की 523 गाय–सांड, बछड़े–बछड़ियों का पालन इस केन्द्र पर किया जा रहा है। इस नस्ल की गायों में प्रथम प्रसव की अवधि 1410 दिन से घटकर 1260 दिन हो गई है। कांकरेज नस्ल की गायों से प्रति ब्यात दूध उत्पादन बढ़कर 2500 लीटर हो गया है जो कि राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो के औसत दुग्ध उत्पादन 1738 लीटर से कहीं अधिक है। विश्वविद्यालय के इस केन्द्र पर कांकरेज गाय से 18.2 लीटर अधिकतम दूध उत्पादन लिया गया है। प्रथम ब्यांत की उम्र में भी आशातीत कमी हुई है। कांकरेज नस्ल की एक बछड़ी दो वर्ष में ही गाय बन गई है। विश्वविद्यालय के इस प्रजनन केन्द्र द्वारा राज्य में गौशालाओं और पंचायत स्तर पर प्रगतिशील पशुपालकों को 68 उन्नत नस्ल के कांकरेज बछड़े और सांडों का वितरण किया गया है।

अपने विश्वविद्यालय को जानें — निदेशक कार्य (भू–संपति) अनुभाग

वेटरनरी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही 2010 में पूरे राज्य में विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाईयों में आधारभूत ढांचागत निर्माण, विकास और रख–रखाव के लिए निदेशक कार्य (भूसंपति अधिकारी) अनुभाग का गठन किया गया। इस अनुभाग के मुखिया अधिशाषी अभियन्ता (सिविल) स्तर के एक अधिकारी सहित सहायक अभियंता (सिविल वर्क) के 4 और एक सहायक अभियन्ता (विद्युत) के साथ तकनीकी एवं अन्य कार्मिकों के पद हैं। इस अनुभाग में गुणवत्ता पूर्ण निर्माण कार्य तथा पारदर्शिता के लिए निर्माण सामग्री की गुणवत्ता की जांच, एक लाख रूपये लागत के कार्यो के लिए ऑन–लाईन निविदा प्रक्रिया, एक करोड़ रू. से अधिक के कार्यो के लिए निविदादाता की क्षमता का पूर्व आंकलन करने सहित कार्यों के तकनीकी परीक्षण की पुख्ता व्यवस्था की गई है। दो से पांच करोड़ रू. राशि की निविदाओं के लिए निविदादाता की पोस्ट–योग्यता जांचकर विश्वविद्यालय की मूल्यांकन समिति द्वारा तकनीकी निविदाओं का परीक्षण किया जाता है। 10 लाख रू. लागत से अधिक के निर्माण कार्य संवेदक की ''डिफाल्टर गारंटी'' तीन वर्ष तक रखे जाने का भी प्रावधान किया गया है। अनुभाग द्वारा 50 लाख रू. से अधिक की निर्माण कार्य निविदाओं के लिए संबंधित निर्माण एजेन्सी द्वारा साईट पर ही सामग्री की गुणवत्ता जांच की प्रयोगशाला स्थापित किया जाना आवश्यक है, जिससे चालू निर्माण कार्यो में प्रयुक्त सामग्री की मौके पर ही अभियंताओं द्वारा जांच की जाती है। विश्वविद्यालय के बीकानेर मुख्यालय पर निर्माण सामग्री की गुणवत्ता जांच की आधुनिकतम प्रयोगशाला में स्थापित उन्नत उपकरणों से भी जांच व परीक्षण की सुविधा मुहैया करवाई गई है। निर्माण एजेन्सी के बिलों के भुगतान प्रक्रिया के लिए अनुभाग में ''प्री चैकिंग सिस्टम'', ई–मेजरमेंट बुक, कम्प्यूटरीकृत विधि से निपटारा और निर्माण एजेन्सी को ऑन लाइन भुगतान की व्यवस्था शीघ्र लागू की जाएगी। अनुभाग द्वारा लागू किए गए इन उपायों से राज्य के 17 विभिन्न जिलों में स्थित इकाइयों में उम्दा भवन निर्माण और अन्य सिविल कार्यों से विश्वविद्यालय की एक नई साख कायम हुई है।

पशुओं में खुरपका-मुंहपका एवं पाश्चुरेल्लोसिस का मिश्रित संक्रमण

पशुपालक भाईयों को इस अंक में हम मिश्रित संक्रमण के बारे में जानकारी देना चाहेंगे। सामान्यतः पशु एक समय में एक ही बीमारी से प्रभावित होता है जिसका निदान, उपचार एवं प्रबंधन सरल व प्रभावशाली होता है, लेकिन कई बार एक से अधिक प्रकार के संक्रमण पशुओं को एक साथ प्रभावित कर सकते हैं, इसे मिश्रित संक्रमण कहा जाता है। मिश्रित संक्रमण में पशु भंयकर रूप से प्रभावित होते हैं और उनमें मृत्यु दर भी सामान्य से अधिक होती है। साथ ही मिश्रित संक्रमण का निदान, उपचार एवं प्रबंधन भी बहुत मुश्किल हो जाता है।

ऐसा ही एक मिश्रित संक्रमण राज्य के कई जिलों में इन दिनों देखने में आया है, जिसमें पहले पशु खुरपका–मुंहपका रोग से प्रभावित होते हैं जिसमें मृत्यु दर बहुत कम होती है लेकिन साथ ही पाश्चुरेल्ला से संक्रमित होने पर मृत्यु दर असामान्य रूप से बढ़ जाती है। पशुपालक एवं चिकित्सकों के लिए भी यह एक मुश्किल स्थिति बनती है। इस मिश्रित संक्रमण में पशु को तेज बुखार आता है, मुंह, पैर व थनों पर छाले हो जाते है, कई दिन तक बुखार रहता है, पशु चारा खाना बंद कर देता है, दूध उत्पादन लगभग शून्य हो जाता है और 3–5 दिनो में पशु की मृत्यु हो जाती है। छोटे पशु बच्चों में बिना कोई लक्षण आये 1–2 दिन में ही मौत हो जाती है।

वैज्ञानिक रूप से परखने पर यह ज्ञात होता है कि प्रारम्भिक रूप से खुरपका–मुंहपका होने पर पशु के बीमारियों से लड़ने की क्षमता में कमी आती है और अन्य दूसरे संक्रमण होने से पशुओं में मृत्युदर बढ़ जाती है। अतः पशुपालकों को चाहिए कि अपने स्वस्थ पशुओं को समयानुसार आवश्यक रूप से बीमारियों से बचाव के लिए टीके लगवायें और भविष्य में होने वाली संभावित बीमारियों के प्रकोप से बचें। मार्च माह में खुरपका–मुंहपका रोग के टीके लगवायें।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

सफलता की कहानी

गोपालन कर आत्मनिर्भर बनें-दर्शन एवं मुकेश

श्रीगंगानगर जिले की घड़साना तहसील के गांव 2 पीएम 11 के युवा दर्शनसिंह और मुकेश सुथार कंपनी की नौकरी छोड़कर प्रगतिशील पशुपालक बन आज आराम से अपने जीवन का गुजर–बसर कर रहे हैं। किसान परिवार से सम्बद्ध दोनों युवाओं को कंपनी की नौकरी में रहते आर्थिक परेशानियों से जूझना पड़ रहा था और परिवार का गुजारा भी मुश्किल से चलता था। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, (वीयूटीआरसी) सूरतगढ़ के संपर्क में आने से उन्हें पशुपालन की सलाह देकर डेयरी व्यवसाय के लिए प्रेरित किया गया। इसके लिए उन्होंने तमाम तकनीकी और बढ़िया गौ नस्लों की जानकारी प्राप्त करके 10 गायों से गोपालन शुरू किया। डेयरी व्यवसाय में दूध विक्रय करने से उनकी आय शुरू हो गई। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र के पशुचिकित्सा विशेषज्ञों के निंरतर संपर्क में रहते हुए पशुपालन की आधुनिक तकनीक, पौष्टिक आहार और रखरखाव बाबत उचित परामर्श प्राप्त कर डेयरी व्यवसाय को विस्तार देना शुरू किया। आज वे 20 दुधारू गायों से 1500 लीटर दूध प्रतिदिन का उत्पादन ले रहे हैं। गोपालन से उन्हें नियमित आमदनी मिलने लगी जिससे उनका आत्म विश्वास इस व्यवसाय के प्रति अधिक प्रगाढ़ हो गया। वैज्ञानिकों की सलाह से युवा व्यवसाईयों ने 2 बकरी एवं 23 मुर्गीयों की खरीद कर मुर्गीपालन भी शुरू कर दिया है जिससे उन्हें अतिरिक्त आय भी मिलनी शुरू हो गई। युवावस्था से ही गोपालन शुरू करने से दर्शन सिंह व मुकेश सुथार ने गायों के खान–पान की व्यवस्था और हारी–बीमारी के समय उपचार बाबत भी जानकारी हासिल की। वे संतुलित आहार देने के साथ साथ अपने पशुओं को नियमित रूप से खनिज लवण भी देते हैं। डेयरी में तूड़ी का यूरिया से उपचारण, अजोला हरे चारे का उत्पादन एवं हरे चारे का आचार आदि तकनीकों का भरपूर उपयोग शुरू कर दिया। दर्शन सिंह व मुकेश सुथार अपनी समझ और ज्ञान से गायों का समय पर टीकाकरण और छोटी मोटी बीमारियों का उपचार स्वयं ही कर लेते हैं और नियमित अंतराल से कृमिनाशी दवा पिलाते हैं। वे डेयरी कार्य में परिवार के सहयोग के साथ 3 मजदूरों को रोजगार भी दे रहे हैं। युवा गोपालक दर्शनसिंह व मुकेश सुथार ने युवावस्था में ही सूझ बूझ और दूरदर्शिता का परिचय दिया और आज वे अपने पैरों पर खड़े होकर अपने परिवार का भरण–पोषण भली प्रकार करते हैं। समाज में भी उनकी प्रतिष्ठा में चार चांद लगे हैं। बेरोजगार घूम रहे युवाओं के लिए वे एक प्रेरणा के स्त्रोत बनें है।

–दर्शन सिंह एवं मुकेश सुथार, घड़साना (मो. 9829994525)

निदेशक की कलम से...

गर्मी की दस्तक के अनुकूल पशुपालन पर ध्यान दें

प्रिय पशुपालक व किसान भाईयों!

मार्च माह से गर्मी का आगमन शुरू हो जाता है। फरवरी में मावठ के बाद से ही मच्छर, मक्खी, चींचड़ आदि जीवों की संख्या में वृद्धि के कारण इनसे फैलने वाले रोगों से बचाव करने की आवश्यकता है। अतः गर्मी में होने वाले रोगों के प्रति सावधानी रखनी होगी। अतः ऐसे में पशुओं की तुरंत चिकित्सा करवानी चाहिए। यदि दूध उत्पादन में कमी हो रही हो तो पशुचिकित्सक से दूध व पेशाब की जांच अवश्य करवाएं। ग्रीष्म काल में पशु आहार और चारे की कमी भी सामने आ सकती है, अतः उपलब्ध हरे चारे से साइलेज तैयार करें। हरे चारे के उचित संरक्षण के लिए साइलेज बैग का भी उपयोग किया जा सकता है। इस समय हरे चारे के लिए मक्का, बाजरा एवं ज्वार की बुवाई करें। बहुवर्षीय घासों जैसे हाईब्रिड नेपियर, गिनी घास की रोपाई पहले से तैयार खेतों में करें। ब्याहने वाले पशुओं को प्रसूति बुखार से बचाने के लिए प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण देना चाहिए। दुधारू पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुट्ठी बांधकर निकालें। नवजात बछड़े–बछड़ियों व कटड़े–कटड़ियों को अन्तःपरजीवी नाशक नियमित रूप से देना फायदेमंद है। कुछ मादा पशुओं में गर्मी (ताव में आना) के लक्षण दिन में कम तथा रात्री में अधिक प्रदर्शित होते हैं। अतः पशुपालक अपने पशुओं का ध्यान रखें। गर्भित (छःमाह से अधिक) पशुओं को राशन की अतिरिक्त खुराक देनी चाहिए। **-प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **मार्च, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**डॉ. तरूणा भाटी** 9413602455 माइक्रोबायोलाजी विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	बदलते मौसम में पशुओं में होने वाले संक्रामक रोग एवं उपचार	03.03.2016
2	**डॉ. सुनीता चौधरी** 9610341777 पशु औषधि विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	गायों में ब्यांत पश्चात् होने वाली बीमारियां एवं उनकी रोकथाम	10.03.2016
3	**डॉ. मोहनलाल चौधरी** 9414603842 पशुधन उत्पादन प्रबन्धन, सीवीएएस, बीकानेर	दूध दोहने के समय ध्यान देने योग्य प्रमुख जानकारी	17.03.2016
4	**डॉ. प्रवीण पिलानियां** 9460869525 पशु परजीवी विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं के बाह्य परजीवी एवं उनके रोकथाम के उपाय	24.03.2016
5	**डॉ. रूचि मान** 9530073780 पशु शरीर क्रिया विज्ञान विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	पशुओं में तनाव के कारण एवं उपाय	31.03.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : मार्च, 2016

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया